BORDERNEWSMIRROR
BNM
to the point...
www.bordernewsmirror.com
Monday
08-01-2024
www.bordernewsmirror.com
Only bilingual Newspaper

एनिमल' सक्सेस पार्टी:रश्मिका से गले मिलते नजर आए रणबीर

पार्टी में रणबीर कपूर को वाइफ आलिया, मां नीतू कपूर और ससुर महेश भट्ट के साथ देखा गया। रणबीर और आलिया ने भी साथ में पोज दिया।

अर्चना गौतम ने खरीदा करोड़ों का घर

अर्चना गौतम की, जिन्होंने हाल ही में सपनों की नगरी, मुंबई में अपना खुद का आशियाना खरीदा है। वैसे, इस आशियाना की कीमत लाखों में नहीं बल्कि करोड़ों में है।

शुरु हुई आयरा-नुपुर की वेडिंग फेस्टिविटी

आमिर खान की बेटी आयरा खान इन दिनों फैमिली और फ्रेंड्स के साथ उदयपुर के ताज लेक पैलेस में हैं। यहां 6 से 10 जनवरी तक उनकी डेस्टिनेशन वेडिंग चल रही है।

स्वच्छ भारत मिशन- साफ होते शहर-गांव

करीब नौ साल पहले का वह मंजर यकीनन यादगार था जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं झाड़ू लेकर राजधानी दिल्ली की सड़कों पर सफाई करने उतरे थे।

BRIEFLY

भारत और प्रधानमंत्री मोदी पर बयानबाजी में मालदीव सरकार के तीन मंत्री निलंबित

नई दिल्ली। भारत और प्रधानमंत्री मोदी पर अपमानजनक टिप्पणी किये जाने के मामले में मालदीव के तीन नेताओं पर गाज गिरी है। मालदीव सरकार ने मंत्री मरियम शिउना, मालशा शरीफ और महज़ूम माजिद को निलंबित कर दिया है। इसके बाद निलंबित मंत्री महमूद मस्जिद ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर अपना अकाउंट निष्क्रिय कर दिया। मालदीव के युवा अधिकारिता उप मंत्री मरियम शिउना की हालिया टिप्पणियों के संबंध में भारतीय उच्चायुक्त ने माले में मामला उठाया है। इसके बाद वहां की सरकार का आधिकारिक बयान आया था कि यह मंत्रियों की व्यक्तिगत राय थी और यह सरकार की सोच को प्रदर्शित नहीं करती। बयान में यह भी कहा गया था कि सरकार इस तरह के आपत्तिजनक बयानों पर कार्रवाई करने से पीछे नहीं हटेगी। अभिव्यक्ति की आजादी का उपयोग जिम्मेदार ढंग से किया जाना चाहिए। इसी के बाद मालदीव सरकार के प्रवक्ता इब्राहिम खलील ने एक बयान में कहा कि बयानबाजी के लिए जिम्मेदार मंत्री मरियम शिउना, मालशा शरीफ और महज़ूम माजिद को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। दरअसल, मालदीव में नई सरकार बनने के साथ ही भारत के साथ संबंधों में खटास आनी शुरु हो गई थी। इस बीच वहां की मंत्री मरियम शिउना और अन्य नेताओं के भारत विरोधी बयानों ने आग में घी डालने का काम किया।

Trending News

खादी एवं सरस महोत्सव पूर्वजों की व्यवस्था को संजोये रखने का एक बेहतरीन माध्यम: मुख्यमंत्री

बीएनएम@रांची

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि खादी सिर्फ एक पहनावा मात्र नहीं है। यह हमारी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा और स्वदेशी होने का परिचायक है। मुख्यमंत्री रविवार को राजधानी रांची के मोरहाबादी मैदान में राष्ट्रीय खादी एवं सरस महोत्सव का उद्घाटन करने के बाद लोगों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम सभी इस बात से भली-भांति वाकिफ हैं कि खादी के साथ महान शख्सियत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम जुड़ा है, जिन्होंने देश-दुनिया में खादी को अलग पहचान दी। ऐसे में हम सभी को खादी से जुड़ने की जरुरत है हम अपनी पारंपरिक ग्रामीण और स्वदेशी व्यवस्था को और मजबूत करते हुए आगे ले जा सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज भौतिकवादी युग और तकनीक का जमाना है। मशीनों के साथ हम जी रहे हैं, लेकिन इसके बाद भी अपनी परंपरा, संस्कृति और सभ्यता को साथ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। खादी एवं सरस महोत्सव का आयोजन इसी कड़ी का एक हिस्सा है, जिसके जरिए हम अपनी ग्रामीण-देसी पारंपरिक और पूर्वजों की व्यवस्था को संजोये हुए हैं और आज की पीढ़ी को उससे अवगत करा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जमाना चाहे जितना आगे बढ़ जाए लेकिन हमारे देश और राज्य में आज भी ग्रामीण तथा स्वदेशी व्यवस्था की अहमियत बरकरार है। खादी जैसा ग्राम उद्योग इसी का एक उदाहरण है।

प्रधानमंत्री करेंगे वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट का उद्घाटन, राज्य का करेंगे तीन दिवसीय दौरा

बीएनएम@नई दिल्ली

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 08-10 जनवरी तक गुजरात का दौरा करेंगे। प्रधानमंत्री 10 जनवरी से गांधीनगर में शुरु हो रहे तीन दिवसीय वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट के 10वें संस्करण का उद्घाटन करेंगे। समिट का आयोजन शिखर सम्मेलन का विषय 'वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024-भविष्य का प्रवेश द्वार' है। इस दौरान प्रधानमंत्री वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो का भी उद्घाटन करेंगे। प्रधानमंत्री शीर्ष वैश्विक निगमों के सीईओ के साथ बैठक करेंगे। प्रधानमंत्री गिफ्ट सिटी में ग्लोबल फिनटेक लीडरशिप फोरम में प्रमुख व्यापारिक नेताओं के साथ बातचीत करेंगे। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, प्रधानमंत्री मोदी 08 जनवरी को गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर पहुंचेंगे, जहां वह विश्व नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें करेंगे। इसके बाद शीर्ष वैश्विक निगमों के सीईओ के साथ बैठक करेंगे। दोपहर करीब तीन बजे वह वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो का उद्घाटन करेंगे। 10 जनवरी को सुबह प्रधानमंत्री गांधीनगर के महात्मा मंदिर में वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वह शीर्ष वैश्विक निगमों के सीईओ के साथ बैठक करेंगे। इसके बाद प्रधानमंत्री गिफ्ट सिटी जाएंगे, जहां शाम को वह ग्लोबल फिनटेक लीडरशिप फोरम में प्रमुख व्यापारिक नेताओं के साथ बातचीत करेंगे।

केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी 10 जनवरी को आएंगी बिहार

बीएनएम@पटना

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए बिहार में भाजपा नेताओं को और अधिक प्रशिक्षित किया जायेगा। इस सिलसिले में अब केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी 10 जनवरी को पटना आ रही हैं। वे पटना में भाजपा के मीडिया कार्यशाला कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि स्मृति ईरानी शामिल होंगी। दरअसल, लोकसभा चुनाव के पहले भाजपा अपने स्थानीय नेताओं को हर प्रकार के गुर सिखाना चाहती है। इसमें मीडिया से कैसे रुबरु होना है, केंद्र सरकार की योजनाओं को कैसे प्रभावशाली तरीके से पेश करना है, भाजपा से कैसे आम लोगों को जोड़ना है। इसे लेकर इस कार्यशाला में अहम सुझाव दिए जा सकते हैं। भाजपा नेताओं को स्मृति ईरानी तमाम मुद्दों पर अहम सुझाव दे सकती हैं। इस बीच 13 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बिहार आगमन का कार्यक्रम है। इसके साथ लोकसभा चुनाव को देखते हुए अमित शाह और जेपी नड्डा की भी बिहार के कई जिलों में जनसभाएं होनी है। इन सबके बीच अब स्मृति ईरानी के आने की खबर भी लोकसभा के चुनावी अभियान का हिस्सा माना जा रहा है।

बांग्लादेश में चुनावी हिंसा के मद्देनजर सीमा पर बीएसएफ ने बढ़ाई गश्त

बीएनएम@कोलकाता

कोलकाता। पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में चुनावी हिंसा के मद्देनजर भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने गश्त बढ़ा दी है। बांग्लादेश से लगती सीमा पर सुरक्षा कड़ी करने के केंद्रीय गृह मंत्रालय के निर्देश के बाद यह कदम उठाया गया है। बीएसएफ के दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के एक वरिष्ठ अधिकारी ने रविवार को बताया कि भारत और बांग्लादेश सीमा पर तैनात बीएसएफ टीम को अधिक सतर्क रहने को कहा गया है। सीमावर्ती क्षेत्रों में गश्त भी बढ़ाई गई है ताकि किसी भी तरह के अवैध घुसपैठ को रोका जा सके। उन्होंने बताया कि बांग्लादेश बॉर्डर गार्ड्स (बीजीबी) के साथ मिलकर समन्वय बैठक की गई है। बीजीबी के इनपुट के मुताबिक भारतीय सीमा में बीएसएफ भी अतिरिक्त तौर पर सतर्कता बरत रही है। डीआईजी रैंक के एक अधिकारी ने बताया कि चुनाव के बाद बड़ी संख्या में सीमा पर घुसपैठ की संभावना बनी रहती है। इस बार चुनाव में वहां हो रही हिंसा के बाद इसकी संभावना और अधिक है। पश्चिम बंगाल से सटी भारत बांग्लादेश सीमा पर बड़े पैमाने पर सुबह से ही ऐसे लोगों की भीड़ है जो घुसपैठ की फिराक में थे, लेकिन बीएसएफ ने अतिरिक्त सतर्कता बरती है।

मां मनोकामना ज्वेलर्स से अज्ञात चोरों ने 6 लाख के जेवरात पर किया हाथ साफ

बीएनएम@तुरकौलिया

तुरकौलिया। थाना क्षेत्र अंतर्गत तुरकौलिया मुख्य चौक के समीप मां मनोकामना ज्वेलर्स और चौक से बाजार जाने वाली रोड में स्थित कन्हैया ज्वेलर्स दुकान को अज्ञात चोरों ने निशाना बनाते हुए करीब 6 लाख के जेवरात पर हाथ साफ किया है। दोनों दुकानों की बीच की दूरी लगभग 500 मीटर है। जहां दोनों दुकानों का शटर तोड़कर अज्ञात चोरों ने करीब 6 लाख का सोने-चांदी का जेवर दोनों दुकानों से चुराया है। मनोकामना ज्वेलर्स के प्रोपराइटर लालबाबू सोनार का पुत्र पंकज सोनी ने बताया कि सुबह में किसी ने फोन किया कि उसके दुकान का ताला टूटा हुआ है और आधा शटर खुला हुआ है। खबर मिलते ही वह फौरन घर से दौड़े-दौड़े दुकान पर आया तो देखा कि ताला टूटा हुआ है। इसकी सूचना पुलिस को देते दुकान के अंदर गया तो देखा कि छोटा तिजोरी तोड़कर करीब 3 लाख का जेवर चोरी कर ली गई है। जिसमे ग्राहक का भी मरम्मती का जेवर था। साथ ही 9 सौ रुपए भी काउंटर से निकाली गई है। दुकान में लगे कैमरे का डायरेक्शन दुसरी तरफ मोड़कर उसका तार भी काट दिया गया है। वही कन्हैया ज्वेलर्स एवं बर्तन दुकान का प्रोपराइटर मुनीलाल प्रसाद और उसका पुत्र कन्हैया कुमार ने भी यही बताया कि उसे भी अहले सुबह दुकान का ताला टूटने का खबर मिला था। जब वह दुकान पर आकर देखा तो शटर का ताला तोड़कर उसके तिजोरी से भी करीब 3-4 लाख रुपए की ज्वेलरी की चोरी की गई है। दुकानदार मुनीलाल प्रसाद ने यह भी बताया कि पहले दुकान के पीछे सीढ़ी लगाकर चोर छत पर चढ़कर दरवाजा तोड़कर अंदर घुसे थे। लेकिन दुकान के अंदर जाने के लिए एक और दरवाजा को नही तोड़ सके। इसके बाद फिर दुकान का मेन शटर का ताला तोड़कर घटना को अंजाम दिए हैं। पुलिस ने दोनों दुकानों का निरीक्षण किया है। अगल-बगल के सीसीटीवी को खंगाला जा रहा है। हैरत की बात यह है कि चोरों ने अगल-बगल लगे सभी सीसीटीवी कैमरे का भी तार काट दिया है। चोरी की घटना से दुकानदारों में दहशत का माहौल है। पुलिस का कहना है कि स्क्वायड डाग बुलाने की प्रक्रिया की जा रही है। थानाध्यक्ष अनील कुमार ने बताया कि घटना की छानबीन की जा रही है।

NEWS IN BRIEF

परिवार नियोजन कार्यक्रम के तहत 24 महिलाओं का किया गया बंध्याकरण

पताही। प्रखंड कार्यालय स्थित पताही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर शुक्रवार को महिला बंध्याकरण शिविर आयोजित किया गया।जिसमे 24 महिलाओं का बंध्याकरण किया गया।काउन्सलर सतीश मिश्रा ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पताही में आयोजित नसबंदी शिविर में 30 महिलाओं ने बंध्याकरण कराने का रजिस्ट्रेशन किया जिसके बाद उन सभी महिलाओं का जाँच करने के बाद बंध्याकरण के लिये 24 महिलाओं का चयन किया गया।बंध्याकरण कराने आई महिलायें ऑपरेशन के लिये अपनी बारी का इंतजार करती नजर आई।इस कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ शंकर बैठा के साथ काउन्सलर सतीश मिश्रा,प्रखंड स्वास्थ्य प्रबंधक राज कुमार,एएनएम रिंकी कुमारी के साथ अस्पताल के अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

देशविरोधी शक्तियों को दरकिनार कर राष्ट्रहित में आप से जुड़ रहे लोग: उमेश

केसरिया। आम आदमी पार्टी के द्वारा रविवार को विधानसभा स्तरीय जनसंवाद एवं पंचायत स्तरीय पदाधिकारी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। देवीगंज स्थित एक निजी परिसर में आयोजित इस समारोह में पार्टी के दर्जनों पदाधिकारी व कार्यकर्ता शामिल हुए। संबोधित करते हुए पार्टी के जिला प्रभारी उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि लोग देशविरोधी शक्तियों को दरकिनार कर राष्ट्रहित में आम आदमी पार्टी से जुड़ रहे हैं। यह आम आदमी पार्टी द्वारा दिल्ली व पंजाब में किये गए जनहितकार्यों का परिमाण है।

बेलाही राम पंचायत में हुई जन सुराज की महत्वपूर्ण बैठक

बीएनएम@पताही

पताही। जन सुराज पंचायत कमिटी की एक महत्वपूर्ण बैठक में, वार्ड और बूथ स्तर की कमिटियों की स्थापना का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है, जिससे संगठन का विस्तार कार्यक्षमता को बढ़ावा मिलेगा। रविवार को बेलाही राम पंचायत भवन में हुई जन सुराज प्रखंड कार्यवाहक समिति की बैठक का सूत्रधार प्रशांत किशोर के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। पीके यूथ कोऑर्डिनेटर संतोष राउत ने बताया कि इस बैठक में जन सुराज के सिद्धांतों को गांव गांव तक पहुंचाने का संकल्प किया गया है। इस मौके पर, नए पदाधिकारियों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। बैठक की अध्यक्षता की गई जन सुराज जिला उपाध्यक्ष और पूर्व विधानसभा प्रत्याशी इंजीनियर संजय कुमार ने की। संचालन का जिम्मा रविशंकर सिंह ने संभाला। साथ ही, उन्हें प्रत्येक माह में पंचायत स्तरीय बैठक करने का निर्देश दिया गया है।

डीलरों के हड़ताल के कारण जनवरी माह का वितरण हो रहा प्रभावित

बीएनएम@केसरिया

केसरिया। जनवितरण प्रणाली विक्रेताओं के अनिश्चितकालीन हड़ताल के कारण माह जनवरी का राशन वितरण प्रभावित हो रहा है। जिससे राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम से आच्छादित प्रखण्ड क्षेत्र के 33897 राशनकार्डधारी जनवरी माह के राशन के लिए भटक रहे हैं। बताया जा रहा है कि मार्जिन मनी बढ़ाने सहित अपनी विभिन्न माँग के समर्थन में जनवितरण प्रणाली विक्रेता एक जनवरी से हड़ताल पर हैं। फेयर प्राइस डीलर्स एसोसिएशन व अन्य संगठनों के संयुक्त आह्वान पर यह हड़ताल किया गया है। जिसका प्रखण्ड के विक्रेता समर्थन करते हुए वितरण बंद किये हुए हैं। विभागीय वेबसाइट के अनुसार प्रखण्ड क्षेत्र में 102 जनवितरण प्रणाली विक्रेता हैं। रविवार की दोपहर तक प्रखण्ड क्षेत्र में जनवरी माह का वितरण मात्र 1.23 प्रतिशत हुआ था। विभाग ने वर्तमान माह के खाद्यान वितरण के लिए तीन जनवरी से ई-पॉश खोल दिया है। वहीं राज्य खाद्य निगम के गोदाम से प्रखण्ड क्षेत्र के करीब 70 फीसदी डीलरों को अनाज की आपूर्ति कर दी गई है। लेकिन वितरण शुरु होने के पाँच दिन बाद भी वितरण धीमा होना हड़ताल के समर्थन को दर्शाता है। एसोसिएशन के प्रखण्ड अध्यक्ष भोला राय की मानें तो जब तक लंबित माँग सहित अन्य माँग पर सरकार विचार नहीं करती है तब तक हड़ताल जारी रहेगा।

त्रिवेणी कैनाल का बांध टूटा, सैकड़ो एकड़ में लगी फसल बर्बाद

बीएनएम@ रामगढ़वा

रामगढ़वा। प्रखंड क्षेत्र के अहिरौलिया पंचायत के सिहोरवा गांव के समीप अवस्थित त्रिवेणी कैनाल में अचानक पानी आ जाने और नहर का तट टूटने से इसका पानी सरेह में फैलने के कारण पूरा फसल डूब गया है ।इस बाबत ग्रामीणों रमेश चन्द्र शुक्ल,रितेश झा आदि ने बताया कि शनिवार की मध्य रात्रि उक्त नहर में अचानक पानी आ गया ,और अत्यधिक पानी के दबाव में नहर के पश्चिमी इलाके अवस्थित जर्जर तट टूट गया ,जिसके कारण खेतो में लगे गेंहू,सरसो व मसूर की फसल डूब गई।वही पानी मे डूबने से गेंहू,मसूर,व सरसो की फसल मृत हो गयी ।बता दे कि इन इलाके में पिछले वर्ष की तुलना में इस साल धान की फसल भी नही हुई है ।जिसके कारण किसान काफी परेशान हो गए है।वही नहर के तट टूटने की खबर ग्रामीणों ने सीओ मणिभूषण कुमार को रविवार की सुबहदी ।खबर मिलते ही सीओ मणिभूषण कुमार रविवार की सुबह टूटे हुए तट का निरीक्षण किया ।और निरीक्षण के बाद सीओ ने बताया कि वे बहुत जल्द डीएम को रिपोर्ट भेजेंगे ।ताकि उचित कार्रवाई किया जा सके ।

युवा राजद के द्वारा ग्राम चौपाल आयोजित

बीएनएम@केसरिया

केसरिया। युवा राजद के द्वारा रविवार को प्रखण्ड क्षेत्र के पनशाला चौक पर ग्राम चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि युवा राजद के जिलाध्यक्ष मो असलम ने कहा कि राजद एक परिवार है जहाँ सभी कार्यकर्ताओं को मान-सम्मान दिया जाता है। कार्यकर्ताओं की बदौलत आज पार्टी मजबूती के साथ लोगों की सेवा के लिए खड़ी है। वहीं पार्टी के राज्य परिषद सदस्य अवधेश राय ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार जनहित के लिए ठोस कदम उठा रही है। राज्य में सत्तारुढ़ सरकार कई जनकल्याणकारी योजना संचालित कर लोगों को लाभान्वित कर रही है। जिससे लोगों का सरकार के प्रति अटूट भरोषा है। उन्होंने कहा कि राजद हमेशा गरीबों के उत्थान व राज्य के विकास के बारे में सोंचती है। इस सोंच को कार्यरुप देकर राज्य को विकास के पथ पर अग्रसर कर रही है। कार्यक्रम के दौरान जगीरहां निवासी राजन कुमार यादव को युवा राजद के केसरिया प्रखण्ड का उपाध्यक्ष, नवीन कुमार शर्मा को मीडिया प्रभारी व मिथिलेश कुमार को सचिव मनोनीत किया गया। इस आशय का मनोनयन पत्र नवमनोनीत पार्टी पदधारकों को पार्टी के वरीय नेताओं ने प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा राजद के प्रखण्ड अध्यक्ष प्रमोद कुमार यादव व संचालन प्रधान महासचिव असफाक खान ने की। मौके पर चंदेश्वर राय, प्रमोद रजक, अरविंद यादव, राजन पासवान, जितेंद्र पासवान, चुटुन ठाकुर, राकेश यादव सहित अन्य मौजूद थे।

9 जनवरी को पताही में निकलेगा भव्य शोभा यात्रा

पताही । श्रीराम जन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा आमंत्रण समिति की बैठक स्थानीय पताही दुर्गा मंदिर परिसर में हुआ।जिसकी अध्यक्षता श्री नवल किशोर सिंह ने किया ।बैठक को सम्बोधित करते हुए प्राण प्रतिष्ठा आमंत्रण समिति के प्रखंड संयोजक सुजीत पाण्डेय ने बताया कि जैसा कि हम सब को ज्ञात हो कि आगामी पौष शुक्ल द्वादशी विक्रम संवत 2080 दिनांक 22 जनवरी 2024 को श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में निर्माणाधिन मंदिर में भगवान श्रीराम का प्रतिष्ठा होना है। अयोध्या से पूजित अक्षत कलश पताही आया है जिसका वितरण सभी परिवार तक होना है।

सहज और सरल भाव से पाठकों के अतंस तक पहुंचती हैं रचनाएं

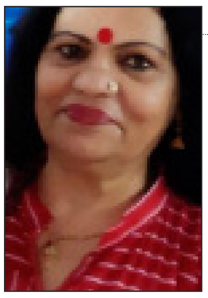

डॉ पुष्पा जोशी

बहरुपिया चांद जैसा कि इस काव्य-संग्रह का नाम है। वास्तव में चांद बहरुपिया ही है। सत्ताईस नक्षत्रों को एक-एक दिन स्वयं में आत्मसात करता हुआ अपने आकार को प्रतिदिन परिवर्तित करता रहता है।

कभी दूज का चांद कभी परेवा का चांद कभी चौथ का चांद कभी पूरी तरह अदृश्य अमावस्या का कभी पूर्ण रूप धर अपनी अद्भुत छटा बिखेरता चांद.....अब देखते हैं डॉ ज्योत्स्ना जी का चांद कैसा है.....

चांदी से चमकीले
कभी पीले कभी नीले
रौशनी से भरे-भरे
तारों संग इठलाते हो
बहरुपिया हो चांद तुम
कभी मामा ,कभी भाई
कभी बेटा ,कभी साजन
कभी गहना,कभी दुल्हन

मुझे लगता है चांद के रुप वर्णन करने से कोई लेखक, कवि अछूता नहीं रहा होगा। गद्य हो या पद्य चांद सभी जगह अपनी पकड़ बनाए रहा। हमारी डॉक्टर साहिबा ने तो चांद को पूरा काव्य -संग्रह ही समर्पित कर डाला।

कवयित्री का प्रथम काव्य-संग्रह ७५ छंदमुक्त कविताओं के साथ काव्य का अमृत महोत्सव मना रहा है। बहरुपिया चांद कविता-संग्रह में कोई भी विषय अछूता नहीं रहा है। मानवता,राष्ट्र, प्रकृति, सम्बन्ध और दोस्ती पर भी कविताएं पाठकों को यहां पढ़ने को मिलेंगी। वैसे भी दोस्ती कविता न रची गई हो तो सब निरर्थक सा लगता है। अरे ! दोस्त ही तो दोस्त की आंखों से बरसात की बूंदों में से आंसू पहचान लेता है।' दोस्ती ' 'दोस्त हैं वो मेरा ' 'ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेगे ' इन तीनों कविताओं का निचोड़ रही है....

बिन दोस्त जीना
क्या जीना, दोस्त
खूं के रिश्ते से भी
अज़ीज़ लगते हैं

दोस्त के लिए कही गई इस बात को किसी कसौटी की आवश्यकता नहीं।' पूनम की रात आज ' कविता में उत्कृष्ट श्रृंगार की छटा देखते ही बनती है-

ओढ़ के चूनर सितारों भरी
निकला लो चांद आज

यहां चांद का मानवीकरण पाठकों को देखने को मिलेगा।

' परिभाषा प्रेम की ' कविता की बानगी देखें...

तोड़ देता कारागार
काट देता लौह बन्धन
लांघता उफनते सागर
तोड़ता हर वर्जना
कुछ भी कर सकता है प्रेम
क्योंकि प्रेम तो बस प्रेम है

मेरे विचार से प्रेम को परिभाषित नहीं किया जा सकता ।वह तो अनंत है,असीम है, अद्भुत अनुभूति का द्योतक है। प्रेम की कल्पना परिकल्पना उसे बांध नहीं सकते।

'प्यारी हिन्दी' , 'तेरे लिए ऐ देश मेरे ',' गुरु महिमा ' कविताएं अलग-अलग कलेवर से पाठकों को अपनी भाषा का मान ,देश की शान और गुरु की सम्मान करने की सीख देंगी।

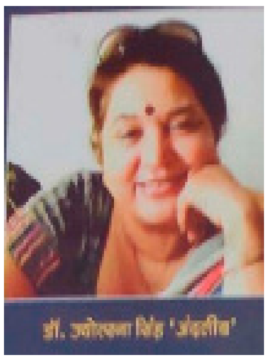

' लो जी होली तो होली ' , 'आज रंग है ',छिपाओ न प्रीत .....

होली के रंगों से पाठकों को सराबोर करती हुई कविताएं फाग के माह में पहुंचा देंगी। डॉ ज्योत्स्ना जी काव्य-संग्रह का श्री गणेश सरस्वती वंदन फिर गुरुओं के नमन से किया है।

मेरा मानना है कि अपने प्रथम काव्य-संग्रह बहरुपिया चांद में कवयित्री डॉ ज्योत्स्ना सिंह जी ने अपने शब्द-चयन और शिल्प-सौष्ठव में परिपक्वता का परिचय देते हुए अत्यंत सहज और सरल भाव से पाठकों के अतंस तक पहुंचने का प्रबंध कर लिया है। आपकी काव्य का स्थाई भाव उत्कृष्टता में विराट का सृजन करे। ज्योत्स्ना जी आप कालजयी सृजन करती हुई कविता यात्रा में अग्रसर हों। बहरुपिया चांद आपके लिए मील का पत्थर साबित हो। अमृत प्रकाशन को भी उत्कृष्ट काव्य -संग्रह प्रकाशित करने के लिए हार्दिक बधाई देती हूं। डॉ ज्योत्स्ना जी को बहरुपिया चांद कविता-संग्रह के आत्मिक बधाई, शुभकामनाएं देती हूं।

पुस्तक समीक्षा-बहरुपिया चांद (कविता-संग्रह)

रचयिता-डॉ.ज्योत्स्ना सिंह 'अंदलीब '
छंदमुक्त कविताएं-75 मूल्य-350 रूपए
पृष्ठ-168 अमृत प्रकाशन दिल्ली

पूजा 'बहार'

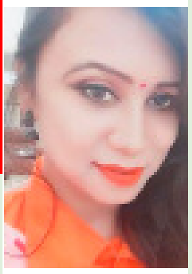

उसने बिना मांगे
सब कुछ दिया।।

दर्द दिया
तन्हाई दी
आँसू दिए
बेवफाई दी।।

ज़माने भर के
ग़म दिए।।

रुसवाईयां दीं
नहीं दिया तो बस
वो थोड़ा सा
वक़्त।।

जिस पर
मेरा हक़ था
सिर्फ मेरा!!!

राजा मीना
मीना हाई कोर्ट नांगल राजावतान
दौसा (राज.) मो.9782253457

कविता : मां

मां ऐसा कहती है
संभल संभल के चलना बेटा
दुनियां की राहों में कष्ट बहुत आएगा बेटा
जीवन की इन पड़ावों मे
ये संसार ऐसा ही हैं
जिसने सीता माता पर भी
मिथ्या आरोप लगाया था
तुम तो साधारण सी लडकी हो
दुनिया कि बातो उलझ गई तो
मार्ग भटक जाओगी
सोच समझकर निर्णय लेना बेटा
दुनिया की इन राहों में
द्रौपदी की लाज बचाने
कृष्ण मुरारी आये थे
अब तो कलयुग है कृष्ण कहां से आएंगे
कैसे तुम्हे बचायगे
तुम्हे अपनी लड़ाई
स्वयं लड़नी होगी वीरागना बनकर
अपनी रक्षा स्वयं करनी होगी
यदि हिम्मत हार गई तो
कैसे तो कैसे लड़ पाओगी
हिम्मत साहस से चलना बेटा
दुनिया की इन राहों में ।।

व्यंग्य: सुबह और शाम चाय का नाम

अशोक व्यास

चाय को अंतर्राष्ट्रीय पेय की मान्यता शायद अभी तक नहीं मिली हो लेकिन एक आम भारतीय सुबह उठकर भगवान का नाम भले ही न ले परन्तु वह चाय को इतनी शिद्दत से याद करता है कि सारी कायनात उसकी इच्छा को पूरी करने के लिये परिवार सहित जुट जाती है . साथ में परिवार के सदस्य भी चाय पीने के लिये लालायित होने लगते हैं. इसी वजह से भारत में चाय को भारतीयों ने अघोषित रूप से राष्ट्रीय पेय का दर्जा दे रखा है और अनुमान है कि विश्व में सबसे अधिक चाय उत्पादन के साथ साथ सबसे अधिक चाय पीने का सोभाग्य भी हमें ही प्राप्त है.

हम सुबह उठने से लेकर रात को सोने के समय तक कभी भी चाय पी सकते हैं चाय पीना हमारा सबसे बड़ा शौक है, पेशन है. उसकी गरिमा कम ना हो जाये इसलिए जैसे पेट्रोल के दाम यदाकदा बढ़ जाते है उसी प्रकार सरकारी और गैर सरकारी दूध बेचने वाले भी दूध के दाम अक्सर बड़ा देते हैं. अगर नहीं बढ़ाएं तो लगता है कि चाय की प्रतिष्ठा कहीं कम तो नहीं हो गई है। अतः दूसरे ही महीने फटाक से दूध या चायपत्ती या शक्कर में से किसी ना किसी के दाम बढ़ ही जाते हैं तब जाकर छाती में ठंडक नहीं गर्मी का एहसास होने लगता है. वैसे अब आवश्यक वस्तुओं का भाव बढ़ने से कोई आश्चर्य नहीं होता है क्योंकि इससे हमारी क्रय शक्ति बढ़ने का सरकार को पता चलता रहता है जिससे उसे टेक्स बढ़ाने में सुविधा हो जाती है. अगर दाम नहीं बढ़े तब जरूर ऐसा लगता है कि आम आदमी की किरकिरी हो गई हो कि यह साला चाय का खर्च भी वहन करने की कुव्वत नहीं रखता है. दूध के दाम बढ़ गए तो ऐसा लगा जैसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार मे कच्चे तेल के दाम बड़ गए हो. चाय पत्ती पहले ही 'पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने' की तरह हो गई है शक्कर की मिठास किसान को गन्ने पर मिलने वाली सब्सिडी पर निर्भर है. मतलब यह है कि भारतीय अपना राष्ट्रीय पेय पीने पर गर्व की अनुभूति कर सकते हैं. कुछ तो चाय की ज्यादा तारीफ करके हमने ही उसकी आदतें खराब की कि वो स्पेशल हो गई है क्योंकि पहले होती थी चाह वाली चालू चाय और अब वह बन गई है गोल्डन, कड़क मीठी स्पेशल चा.....य जब वह वाकई में चालू हुआ करती थी तब उसकी जो इज्जत थी वह इस कारण थी कि चाय तब ही चाय मानी जाती थी जब वह लबसोज हो, लबदोज हो और लबरेज हो यानी चाय इतनी गरम हो की होंठ जल जाए, इतनी मीठी हो की होंठ चिपक जाए और प्याले में इतनी भरी हो कि प्लेट में डालकर सुड़कते हुए पिया जाए.

एक जमाना था जब चाय पीते हुए एक से बढ़कर एक चर्चाएं होती थी उसके बाद एक दौर आया की चाय पीते हुए चर्चा नहीं बल्कि खुद चाय पर चर्चा होने लगी इस चक्कर में सरकारों की चला चली के बेला आ गई थी. बताओ भला यह क्या बात हुई कि जो बातें चाय पीते हुए होती थी उसे छोड़कर सब चाय पर चर्चा करने लगे. इस चक्कर में आजकल चाय पीने वालों का अवमूल्यन होने लगा है किसी से चाय पीने का पूछो तो कोई कहेगा नहीं मैं चाय नहीं पीता हूं, दूसरा कहेगा बस थोड़ी सी देना,

चौथा कहेगा मैं तो काफी पीता हूं, पांचवा कहेगा में तो कुछ और पीता हूं. यह तो सरासर अपमान है अंग्रेजों की दी गई नेमत का. हालांकि उसमें भारतीय किचन के जितने मसाले हैं उसे डालकर हम उसे अमृत बना चुके हैं. अब यह हो रहा है कि चाय की चर्चा नहीं, चाय पर चर्चा नहीं, चाय पर खर्चे की बात होने लगी. मंहगी चाय पत्ती, पेट्रोल के बड़ते दामों की तरह अचानक दूध के दाम में बढोतरी, अंतरराष्ट्रीय बाजार में शक्कर की कमी के कारण निर्यात करना यह सब फालतू बातें होने लगी. पुराने लोगों से पूछो तो वह कहेंगे 'साहब चाय तो हमारे जमाने में पी जाती थी यह नए लोग क्या जाने एक प्याली में दो घूंट भी बड़ी मुश्किल से पी पाते हैं. हमारे जमाने में तो थाली में डालकर चाय पीते थे. उसके बाद गिलास भरकर पीने लगे फिर कप प्लेट का जमाना आ गया तो उसमें भी हमने कोई कमी नहीं की थी दो कप चाय से कम नहीं पीते थे वर्ना तोहीन मानी जाती थी चाय की और पीने वाले दोनों की '.

चाय का जीवन में पिछली शताब्दी में इतना महत्व था कि जब भी किसी जवान हुई कन्या की मां को उसकी शादी का ख्याल आता था तो वह होने वाले दामाद को चाय पर बुला लेती थी. तब वह कन्या भी फट से समझ जाती थी और अपने प्रेमी से गा गा कर कहती थी कि ' शायद मेरी शादी का ख्याल दिल में आया है इसीलिए मम्मी ने मेरी तुम्हें चाय पर बुलाया है'.

सगाई संबंध कराने में चाय का इससे बड़ा सामाजिक योगदान क्या हो सकता है. सत्तर अस्सी के दशक में तो कन्या के हायर सेकेंडरी करने के बाद होम साइंस से ग्रैजुएट करने को शादी से पूर्व का वेटिंग इन पीरियड माना जाता था. तब और कुछ सीखती या ना सीखती टीकोजी बनाना जरूर सीखती थी. आज की पीढ़ी अगर सुन ले तो उसे कोई पारले जी की तरह कोई बिस्कुट समझ ले जबकि यह भी अंग्रेजों की देन थी.

उस समय टीकोजी का एक ही बार इस्तेमाल होता था जब लड़का उस कन्या को देखने आता था. तब कन्या सर पर पल्ला रखकर आहिस्ता और सधे हुए कदमों से चलकर आती थी घरवाले कहते थे 'बेटी मेहमानों को चाय पिलाओ' तब वह छोटी बहन या भाभी द्वारा पहले से लाई गई घर के एकमात्र टीसेट जिसका काम भी एक ही बार पड़ता था उस की केटली से टीकोजी ऐसे उठाती थी जैसे किसी का घूंट उठाया जा रहा हो. तब एक हाथ से केटली के हैंडल को और दूसरे हाथ को ढक्कन पर रखकर कप में चाय भरकर मेहमानों को देती थी. इस सारी प्रक्रिया को लड़के के साथ आने वाली महिलाएं इतनी तीक्ष्ण दृष्टि से देखती थी जैसे होम साइंस प्रेक्टिकल का परीक्षक देख रहा हो. बिना आवाज किए, बिना चाय गिरे अगर लड़की ने चाय को पेश कर दी तो समझो प्रैक्टिकल में पूरे नंबर मिल गए आगे तो संबंध पक्का होना ही समझो.

इसी प्रकार कोई भी धार्मिक कर्मकांड बिना चाय का दौर चले पूरा नहीं माना जाता है उसमे पूजा सामग्री के साथ चाय का भी प्रावधान करना पड़ता है।

BORDER NEWSMIRROR

Monday 08 January 2024

Editorial

काशी में गोवा से भी ज्यादा पर्यटक

अगर कोई यह मानता है कि सबसे अधिक टुरिस्ट समुद्र के किनारे के तटों पर या फिर आकाश को छूते पहाड़ों में सैर करने को आते हैं तो उन्हें एक बार फिर सोचना होगा। मतलब यह है कि अब न तो सबसे अधिक टूरिस्ट गोवा आ रहे हैं या फिर शिमला, नैनीताल या कश्मीर या हिमाचल किसी अन्य हिल स्टेशन पर। आज के दिन सबसे ज्यादा टूरिस्ट को अपनी तरफ आकर्षित करने लगा है वाराणसी। आईसीआईसीआई के एक सर्वे से पता चला है कि पिछले साल-2022 में वाराणसी में 7.02 करोड़ टुरिस्ट पहुंचे। गोवा के हिस्से में लगभग मात्र 85 लाख टूरिस्ट । यूं तो वाराणसी में लगातार खूब टूरिस्ट पहले से ही आते थे पर 2015 के बाद तो स्थिति वाराणसी के पक्ष में पूरी तरह से पलट गई। इस लिहाज से गेम चेंजर साबित हुआ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे (अब स्मृति शेष) का धर्म नगरी वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती में 2015 में भाग लेना। गंगा सिर्फ एक नदी नहीं, हमारी भारतीय सनातन संस्कृति की वाहक भी है। इस लिहाज से जापान के प्रधानमंत्री के स्वागत में काशी में गंगा आरती का आयोजन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौलिक और व्यापक सोच का परिचय देने वाला था। गंगा आरती महज एक पूजाविधि नहीं है। मोदी-आबे ने गंगा आरती मे भाग लेकर दुनिया में भारत की खोई हुई या यूं कहें कि तिरस्कृत का दिये गये सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने अपनी जगह बनाई थी। बीते 60 सालों की राजनैतिक सत्ता ने इस छवि को नजरअंदाज कर एक उपभोगी देश की छवि के रुप में भारत को दुनिया के सामने पेश किया था । संस्कृति के नाम पर ताज के मकबरे को ही खूब भुनाने की कोशिश की गयी। लेकिन, गंगा की "ब्रांडिंग" तो सही माने में भारत के लिए आत्मगौरव का क्षण था। टूरिज्म क्षेत्र के जानकार कहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी और जापान के प्रधानमंत्री आबे के गंगा आरती में भाग लेने के बाद सारे देश में वाराणसी को लेकर एक नई तरह की सकारात्मक सोच विकसित होने लगी।

आपसी शह-मात के खेल में उलझा विपक्षी गठबंधन

विकास सक्सेना

लोकसभा चुनाव में भाजपा को हरा कर मोदी को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने से रोकने के लिए बनाए गए विपक्षी गठबंधन के नेता फिलहाल एक-दूसरे के खिलाफ ही षड़यंत्र रचने में जुटे हैं। सामान्य तौर पर राजनीति में भितरघात कुशल रणनीति माना जाता है, लेकिन इंडी गठबंधन में शामिल दलों के नेता इस सामान्य परम्परा का भी पालन करने को तैयार नहीं हैं। वे खुले मंचों से एक- दूसरे के खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। क्षेत्रीय दलों के निशाने पर सबसे ज्यादा कांग्रेस और उसके नेता हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की नेता वृंदा करात, केरल के मुख्यमंत्री पी विजयन और समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव जिस तरह कांग्रेस की नीतियों और नेताओं प Today's Opinion उससे राजनैतिक हलकों में इस बात की चर्चा होने लगी है कि विपक्षी गठबंधन के ये नेता भाजपा को हराने के लिए एकजुट हुए हैं या फिर उनका उद्देश्य कांग्रेस को खत्म करना है। लालू प्रसाद यादव के राष्ट्रीय जनता दल और नीतीश कुमार के जनता दल यूनाइटेड को विपक्षी गठबंधन का सबसे मजबूत साथी माना जा रहा था क्योंकि ये पहले से यूपीए का हिस्सा थे लेकिन इंडी गठबंधन में चर्चा के बिना ही इन्होंने आगामी लोकसभा चुनाव के लिए बिहार की लोकसभा की सीटों का आपस में बांट कर अपनी मंशा साफ कर दी है। बिहार की लोकसभा की कुल 40 सीटों में से राजद और जदयू ने 17-17 सीटें आपस में बांट ली हैं। बाकी बची छह सीटें कांग्रेस और वामपंथी दलों के लिए छोड़ी गई हैं। लोकसभा चुनाव 2019 में जदयू भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल थी और उसने अपने हिस्से की 17 सीटों पर प्रत्याशी उतार कर 16 पर जीत हासिल की थी। इसलिए जदयू 17 से कम सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार नहीं है। अब यह देखना काफी रोचक होगा कि क्या कांग्रेस और वामपंथी दल महज छह सीटें पाकर संतुष्ट रह पाएंगे। राजद और जदयू ने जिस तरह बिहार की लोकसभा सीटों को आपस में बांट लिया कांग्रेस पर दबाव बनाने की रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है। दरअसल विपक्षी गठबंधन की बैठक में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के नाम का प्रस्ताव रख दिया। उनके प्रस्ताव का अरविन्द केजरीवाल ने समर्थन कर दिया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे दलित समाज से आते हैं इसलिए कोई भी नेता उनके इस प्रस्ताव का विरोध करने का साहस नहीं जुटा सका। लेकिन इस प्रस्ताव पर कोई सहमति भी नहीं बन सकी। फिर भी उनके इस दांव से गठबंधन के तमाम नेता चारों खाने चित हो गए। ममता बनर्जी के इस प्रस्ताव ने राहुल गांधी के प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे हुए देखने के सोनिया गांधी के सपने को ही नहीं तोड़ा बल्कि नीतीश कुमार और लालू प्रसाद यादव को भी गहरी चोट दे दी। पटना में पहली बैठक करवा कर विपक्षी गठबंधन की आधारशिला रखने वाले नीतीश कुमार को उम्मीद थी कि उनको विपक्षी गठबंधन की तरफ से प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार या गठबंधन का संयोजक चुन लिया जाएगा, पटना के बाद कई बैठकें हो चुकी हैं लेकिन अभी तक गठबंधन का संयोजक चुनना तो दूर उनके नाम पर गंभीर चर्चा तक नहीं हुई है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

स्वच्छ भारत मिशन- साफ होते शहर-गांव

आर.के. सिन्हा

करीब नौ साल पहले का वह मंजर यकीनन यादगार था जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं झाड़ु लेकर राजधानी दिल्ली की सड़कों पर सफाई करने उतरे थे। उनके पीछे-पीछे उनके मंत्रिमंडल के कई मंत्रियों से लेकर सरकारी बाबुओं का हुजूम भी सड़कों पर उतर आया था। 2014 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के दिन प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत मिशन का आगाज किया था। यकीनन, महात्मा गांधी की जयंती पर उन्हें इससे बेहतर श्रद्धांजलि शायद दी भी नहीं जा सकती थी। आजाद भारत में संभवत: यह पहला मौका था जब देश में स्वच्छता को लेकर सरकार ने इतनी गंभीरता दिखलाई। 140 करोड़ की आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाला अगुआ यदि खुद सड़क पर उतर आए, फिर समुद्र तट पर घूम-घूम कर कूड़ा उठाने लग जाए, तो यह समझना कतई मुश्किल नहीं कि देश की हुकूमत का साफ-सफाई को लेकर नजरिया क्या है। बीते कुछ वर्षों में, जाहिर तौर पर स्वच्छता के मोर्चे पर हमने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। आज शहरों के बीच स्वच्छता को लेकर देशभर में कई प्रतियोगिताएं हो रही हैं। उनमें एक-दूसरे से बेहतर करने की होड़ लगी हुई है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने अबतक के कार्यकाल में स्वच्छता अभियान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। शायद यही वजह है कि स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत के बाद भारत में स्वच्छता का पुनर्जागरण हुआ है। मिशन ने न केवल शहरों का कायाकल्प किया बल्कि गांवों में भी स्वच्छता की अलख जगाई। अपने देश को साफ-सुथरा रखने की संवेदनशीलता और भावना आज पूरे देश में दिखती है। गांधीजी आजीवन स्वच्छता की अलख जगाते रहे। दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान उन्हें श्वेत निवासियों के इस दावे से लड़ना पड़ा कि भारतीयों में स्वच्छता की कमी है और इसलिए उन्हें अलग रखने की जरूरत है। नटाल विधानसभा को लिखे खुले पत्र में गांधी ने कहा था कि जहां तक स्वच्छता मानकों का सवाल है, भारतीय भी यूरोपीय लोगों के बराबर हो सकते हैं, बशर्ते उन्हें भी उसी तरह का ध्यान और अवसर दिया जाए। 1915 में भारत लौटने पर उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपने कार्यक्रमों के मूल में स्वच्छता के मंत्र को रखा। गांधीजी ने 1941 में कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए रचनात्मक कार्यक्रम नामक पुस्तिका प्रकाशित की। ग्राम स्वच्छता उन अठारह कार्यक्रमों में से छठा था जो गांधीजी ने उस पुस्तिका में बताए थे। कुछ अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम साम्प्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, आर्थिक समानता, सविनय अवज्ञा आदि थे। आज गांधीजी के स्वच्छ भारत की परिकल्पना को पीएम मोदी साकार कर रहे हैं। यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि गाँधी के नाम पर राजनीति करने वाले किसी कांग्रेसी सरकार ने इसके ऊपर कोई ध्यान तक नहीं दिया। स्वच्छ भारत मिशन इन नौ साल में जनआंदोलन बन गया है। आज ज्यादातर सड़कें साफ-सुथरी दिखती हैं, गलियों में कूड़ा नहीं दिखता। चाहे पर्यटन स्थल हों या रेलवे स्टेशन। हर जगह सफाई दिखती है। देश ने स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत एक और बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। अब देश के कुल गांवों में से तीन-चौथाई यानी 75 प्रतिशत गांवों ने ओडीएफ प्लस का दर्जा हासिल कर लिया है। ओडीएफ प्लस गांव वह है, जिसने ठोस या तरल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों को लागू करने के साथ-साथ अपनी खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) स्थिति को बरकरार रखा है। आजतक 4.43 लाख से अधिक गांवों ने खुद को ओडीएफ प्लस घोषित कर दिया है। बात अगर उन राज्यों की करें जिन्होंने 100 प्रतिशत ओडीएफ प्लस गांव हासिल किए हैं वे हैं- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दादर एवं नागर हवेली, गोवा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, केरल, लद्दाख, पुडुचेरी, सिक्किम, तमिलनाडु, तेलंगाना और त्रिपुरा। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में - अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दादरा नगर हवेली और दमन दीव, जम्मू और कश्मीर और सिक्किम में 100 प्रतिशत ओडीएफ प्लस मॉडल गांव हैं।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तभकार और पूर्व सांसद हैं)

मुद्रक एवं स्वामी सागर सूरज, द्वारा राजाबाजार-कचहरी रोड, मोतिहारी बिहार -845401 से मुद्रित तथा सरोतर निवास राजाबाजार, मोतिहारी बिहार से प्रकाशित, संपादक सागर सूरज* फोन न:-06252-296796, प्रसार:-9470050309 ईमेल:- bordernewsmirror@gmail.com वेबसाइट:- www.bordernewsmirror.com(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार) TITLE CODE - BIHBIL02431

सेहत और त्वचा समस्याओं के लिए रामबाण इलाज है केसर का पानी

कई चमत्कारी गुणों से भरपूर केसर लंबे समय से अलग-अलग तरीकों से इस्तेमाल किया जा रहा है। केसर का उल्लेख आयुर्वेद में भी पाया जाता है। पकवानों और व्यंजनों का स्वाद बढ़ाने के लिए इस्तेमाल होने वाला केसर हमारे स्वास्थ्य ही नहीं, बल्कि त्वचा और बालों के लिए भी काफी फायदेमंद होता है।

इसमें मौजूद एंटी-इंफ्लेमेटरी,एंटी-अल्जाइमर, एंटी कॉनवल्सेन्ट और एंटीऑक्सीडेंट जैसे गुण कई तरह की समस्याओं में मददगार होते हैं। केसर का इस्तेमाल अस्थमा, खांसी, गले में खराश, काली खांसी जैसी कई समस्याओं के लिए किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि केसर का पानी भी कई परेशानियों में आपके लिए सहायक साबित होता है। अगर नहीं, तो आज हम आपको बताएंगे केसर के पानी से होने वाले फायदों के बारे में-

त्वचा के लिए फायदेमंद

केसर आपकी त्वचा के लिए बेहद गुणकारी होता है। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर केसर स्किन में मौजूद टॉक्सिन को बाहर निकालने में मददगार है। केसर का पानी पीने से स्किन हाइड्रेट रहती है और इसे पोषण भी मिलता है। इसके अलावा इसके सेवन से कील,मुंहासे,फुंसी समेत कई अन्य समस्याएं दूर रहती हैं।

पीरियड्स के दर्द में कारगर

केसर का पानी माहवारी के दौरान होने वाली समस्याओं में भी काफी आराम दिलाता है। अगर आपको पीरियड्स की वजह काफी दर्द होता है, तो इसके लिए आप केसर का पानी पी सकते हैं। साथ ही अगर आपको हैवी पीरियड्स नहीं आ पा रहे हैं, तो इसके लिए भी केसर का पानी उपयोगी साबित होगा।

हेयरफॉल रोकने में असरदार

बालों का झड़ना एक आम समस्या है, जिससे कई लोग अक्सर परेशान रहते हैं। अगर आप भी इस समस्या से परेशान हैं, तो इसके लिए केसर का पानी पी सकते हैं। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट न सिर्फ हेयरफॉल को रोकते हैं, बल्कि बालों के रोम को मजबूत बनाकर इन्हें बढ़ने में मदद करता है।

शुगर क्रेविंग करें कंट्रोल

अक्सर खाना खाने के बाद कई लोगों को मीठा खाने की क्रेविंग होती है। लेकिन जरूरत से ज्यादा मीठा खाना हमारी सेहत के लिए काफी हानिकारक हो सकता है। ऐसे में अगर आप अपनी शुगर क्रेविंग को कंट्रोल करना चाहते हैं, तो इसके लिए सुबह केसर का पानी पीना काफी फायदेमंद होगा।

चाय-कॉफी का बेहतर विकल्प

ज्यादातर लोगों की आदत होती है कि वह अपने दिन की शुरुआत एक कप चाय या कॉफी से करते हैं। लेकिन खाली पेट सुबह चाय या कॉफी का सेवन आपकी सेहत के लिए नुकसानदेय हो सकता है। ऐसे में अगर आप सुबह के लिए चाय या कॉफी का कोई विकल्प ढूंढ रहे हैं, तो इसके केसर का पानी बढ़िया विकल्प है। इसे पीने से आप पूरे दिन रीफ्रेश फील कर पाएंगे।

बालों को मजबूत, घना और शाइनी बनाने के लिए पिएं ये ड्रिंक्स

खानपान में गड़बड़ी, बढ़ते प्रदूषण, खराब जीवनशैली के कारण बालों से जुड़ी समस्याएं अब लोगों में आम हो चुकी हैं। कम उम्र में बाल सफेद होना हो या असमय बाल झड़ने की समस्या हर तीसरा व्यक्ति इन परेशानियों का शिकार है।

खराब पोषण के कारण भी बालों से जुड़ी समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। हेयर फॉल, बाल सफेद होने की समस्या या बालों से जुड़ी दूसरी तमाम समस्याओं के लिए मार्केट में कई तरह के प्रोडक्ट्स मौजूद हैं। लेकिन इन प्रोडक्ट्स में केमिकल या प्रिजर्वेटिव्स का इस्तेमाल किया जाता है, जो आपके बालों को कई नुकसान पहुंचा सकते हैं। बालों से जुड़ी समस्याओं के खतरे को कम करने के लिए कुछ ड्रिंक्स का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। आइए आज इस लेख में जानते हैं बालों के लिए फायदेमंद ऐसे ही ड्रिंक्स के बारे में।

बालों के लिए फायदेमंद ड्रिंक्स

बालों से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए नियमित रूप से कुछ ड्रिंक्स का सेवन करना बहुत फायदेमंद होता है। लोग अक्सर सुबह उठते ही चाय या कॉफी और कई तरह के कैफीन युक्त ड्रिंक्स का सेवन करते हैं। इन ड्रिंक्स के सेवन से आपके बालों को कई नुकसान हो सकता है।

1. एलोवेरा जूस का सेवन

एलोवेरा जूस का सेवन करने से आपके बालों को बहुत फायदे मिलते हैं। एलोवेरा जूस में विटामिन सी, विटामिन ई, बीटा कैरोटीन जैसे पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। इसका नियमित रूप से सेवन करने से आपके बाल स्ट्रांग होते हैं और उनकी चमक बढ़ती है। इस जूस का सेवन करने से आप दिन भर एनर्जेटिक भी रहेंगे।

2. कीवी का जूस

कीवी का जूस पीने से आपको कई अनोखे फायदे मिलते हैं। कीवी में मौजूद विटामिन ई और अन्य पोषक तत्व बालों को मजबूत और घना बनाने में बहुत फायदेमंद होते हैं। इसका सेवन करने से आपकी इम्यूनिटी भी मजबूत होती है।

3. आंवले का जूस

आंवला सेहत के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। आंवले में मौजूद गुण और पोषक तत्व आपको कई गंभीर बीमारियों और परेशानियों से बचाने का काम करते हैं। आंवले का जूस पीने से आपको हेयर फॉल की समस्या में भी फायदा मिलता है।

बालों से जुड़ी समस्याओं में आंवले का जूस पीने से बहुत फायदा मिलता है।

4. पालक का जूस

पालक का जूस भी आपकी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। पालक में आयरन, बायोटिन आदि की पर्याप्त मात्रा होती है। बालों को मजबूत, घना और शिल्की बनाने के लिए इनका सेवन बहुत फायदेमंद माना जाता है।

बालों को हेल्दी, मजबूत और शाइनी बनाने के लिए ऊपर बताये गए ड्रिंक्स का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। इनका सेवन करने से आपके बालों को पर्याप्त पोषण मिलता है और बाल हेल्दी होते हैं।

शरीर में आयरन की कमी के संकेत हो सकते हैं ये लक्षण

सेहतमंद रहने के लिए बेहद जरूरी है कि शरीर में सभी आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति की जाए। स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक आहार खाना काफी जरूरी होता है। हमारे शरीर के संपूर्ण विकास के लिए कई सारे पोषक तत्व जरूरी होते हैं। ऐसे में पौष्टिक आहार की मदद से शरीर को जरूरी न्यूट्रिएंट्स मिलते हैं। यह बेहद जरूरी है कि इसकी कमी होने पर तुरंत ही शरीर में इसकी पूर्ति की जाए।

पीली त्वचा

खून में मौजूद हीमोग्लोबिन की वजह से आमतौर पर हमारी त्वचा हल्की लाल रंग की नजर आती है। लेकिन अगर आपके शरीर में आयरन की कमी है, तो इसकी वजह से आपकी स्किन के रंग में बदलाव आने लगता है।

आयरन की कमी की वजह से अक्सर त्वचा पीली नजर आने लगती है। इसके अलावा स्किन पर काले या नीले रंग के दाग भी बन सकते हैं।

हाथों-पैरों का ठंडा होना

शरीर में आयरन की कमी होने पर हाथ-पैर ठंडे रहने लगते हैं। अगर आपके शरीर में आयरन की कमी है, तो इसकी वजह से आपको भी हाथ-पैर ठंडे महसूस हो सकते हैं। ऐसे में अगर आप अपने अंदर लगातार इस तरह के संकेत देख रहे हैं, तो तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

नाखूनों का कमजोर होना

आयरन की कमी होने पर इसका असर हमारे नाखूनों पर भी नजर आता है। आमतौर पर कमजोर नाखून कैल्शियम की समस्या की वजह से हो सकते हैं, लेकिन कई बार यह आयरन की कमी का संकेत भी होते हैं। ऐसे में अगर आपके नाखून भी कमजोर पर ज्यादा टूट रहे हैं, तो आपको इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

बालों की समस्या

नाखूनों के साथ ही आयरन की कमी की वजह से बालों पर भी असर पड़ता है। हीमोग्लोबिन के निर्माण में आयरन एक अहम भूमिका निभाता है।

ऐसे में अगर आपके शरीर में आयरन की कमी है, तो इससे आपके नाखून और बाल भी प्रभावित होने लगते हैं। दरअसल, आयरन की कमी की वजह से बालों को जरूरी पोषण नहीं मिल पाता है, जिससे वह झड़ने और कमजोर होने लगते हैं।

आयरन की कमी के अन्य लक्षण

शरीर में आयरन की कमी अक्सर एनीमिया की समस्या को जन्म देती है। यह एक गंभीर समस्या होती है। अगर शुरुआती स्तर में इसकी पहचान कर ली जाए, तो वक्त रहते इसे सही इलाज की मदद से ठीक किया जा सकता है। आयरन की कमी के कुछ अन्य सामान्य लक्षण निम्न हैं-

थकान, बेहोशी, सिर दर्द, कमजोरी, छाती में दर्द, गले में खराश, जीभ में सूजन, सांस लेने में तकलीफ, मुंह के किनारों का फटना, दिल के धड़कन का बढ़ना।

किन चीजों से करें आयरन की पूर्ति

शरीर में आयरन की कमी एक गंभीर हालात उत्पन्न कर सकती है। ऐसे में यह बेहद जरूरी है कि समय से इसके लक्षणों की पहचान कर शरीर में इसकी पूर्ति की जाए।

अगर आप आपके शरीर में भी आयरन की कमी है, तो आप इसके कमी पूरी करने के लिए अपनी डाइट में रेड मीट और पोल्ट्री, सी फूड, बीन्स, गहरी हरी पत्तेदार सब्जियां सूखे मेवे, किशमिश और खुबानी आदि को शामिल कर सकते हैं।

प्लास्टिक के विरोध में कपड़ों की लाखों थैली बांटने वाली अनुभा पुंढीर को मिलेगा विष्णु प्रभाकर स्मृति राष्ट्रीय सम्मान

कमलेश- साहित्य, जनक दबे- पत्रकारिता, सीताराम - शिक्षा और अर्पणा - कला के लिए होंगें सम्मानित

हेमलता म्हस्के

नई दिल्ली। प्लास्टिक के विरोध में गांव -गांव और शहर -शहर में सघन अभियान चलाने वाली डॉ अनुभा पुंढीर को समाज सेवा और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए विष्णु प्रभाकर स्मृति सम्मान देने की घोषणा की गई है।

अनुभा जानी मानी नृत्यांगना भी हैं लेकिन अपने गृह राज्य उत्तराखंड में प्लास्टिक के इस्तेमाल के विरोध में उन्होंने लाखों लोगों को अपनी संस्था की ओर से कपड़े के थैले मुहैया कराए। उनके प्रयास से असंख्य लोगों ने खुद को सदा के लिए प्लास्टिक से अलग थलग कर लिया।

इनके अलावा दिल्ली के कमलेश कमल को साहित्य के लिए, अहमदाबाद गुजरात के- जनक दवे को पत्रकारिता के लिए गांधीनगर के सीताराम बरोट 'सत्यम' को शिक्षा के लिएऔर दिल्ली की- अर्पणा सारथे को कला के लिए विष्णु प्रभाकर स्मृति सम्मान दिए जायेंगे।

राष्ट्रीय स्तर का यह सम्मान गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली और विष्णु प्रभाकर

प्रतिष्ठान, नोएडा द्वारा संचालित सन्निधि संगोष्ठी की ओर से दिया जाएगा। पिछले दस सालों से सन्निधि संगोष्ठी द्वारा हरेक साल में दिसंबर में काका साहब कालेलकर और जून में विष्णु प्रभाकर की याद में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली पांच- पांच युवा हस्तियों को काका साहब कालेलकर सम्मान और विष्णु प्रभाकर सम्मान से सम्मानित किया जाता है। ये सम्मान युवा हस्तियों में नैतिक ऊर्जा भरते हैं और युवाओं में उत्साह का संचार होता है। वे प्रोत्साहित होकर सृजन के नए आयाम रचते हैं।

विष्णु प्रभाकर प्रतिष्ठान के मंत्री अतुल कुमार के मुताबिक ये सम्मान युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए दिए जाते हैं। इस साल विष्णु प्रभाकर सम्मान समारोह 17 जून को दिल्ली स्थित सन्निधि सभागार में आयोजित किया जाएगा।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध राष्ट्रीय दैनिक

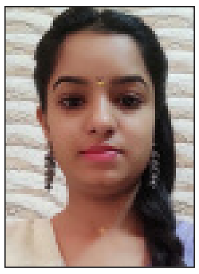

जनसत्ता के संपादक और दर्जनों किताबों के लेखक मुकेश भारद्वाज सभी युवा हस्तियों को सम्मानित करेंगें।

उन्होंने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए देहरादून की डॉ अनुभा पुंढीर को सम्मानित किया जाएगा। एडिथ कैविन यूनिवर्सिटी, आस्ट्रेलिया से एम बी ए, पर्यावरण विज्ञान में स्नातक, एस एम यू बडोदरा से भारतीय नाट्यकला में स्नातक व आपदा प्रबंधन व योग तथा मनोविज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त तथा आई आई एम बंगलूर से जुड़ी प्रोफेसर डा०अनुभा पुंढीर वैसे तो जानी मानी नृत्यांगना हैं लेकिन उनकी उत्तराखंड राज्य में प्लास्टिक विरोधी अभियान की प्रमुख और देश में पर्यावरण रक्षा हेतु समर्पित कार्यकर्ता के रूप में सर्वत्र ख्याति है।

वे आज भी इस अभियान में जोर-शोर से लगी हैं तथा जनजागरण के द्वारा प्लास्टिक विरोध की आवाज बुलंद कर रही हैं। वे कई पुरस्कारों से सम्मानित की जा चुकी हैं। साहित्य के लिए कमलेश कमल को विष्णु प्रभाकर राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

कमलेश कमल पिछले 15 सालों से साहित्य लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हैं,आई टी बी पी के डिप्टी कमांडेंट कमलेश कमल ने हिंदी के विकास के लिए अनेक विश्वविद्यालयों में विमर्श का आयोजन किया।

कमल पूरी तरह से हिंदी साहित्य के विकास के लिए समर्पित हैं और अनेक संस्थाओं के जरिए हिंदी के विकास के लिए निरंतर कार्यरत हैं इनको कई सम्मानो से भी नवाजा गया है। कई किताबें भी प्रकाशित हुई हैं। दो हजार से अधिक रचनाओं का सृजन भी किया है।

इसी तरह सीताराम बरोट सत्यम को शिक्षा के लिए सम्मानित किए जायेंगे। लेखन और अन्य प्रदर्शन कला के जरिए बच्चों को शिक्षित करने के क्षेत्र में सीताराम की भूमिका बहुत अहम है। अपर्णा सरथे को कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए विष्णु प्रभाकर राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया जाएगा।

अहमदाबाद गुजरात के जनक दबे को श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए सम्मानित किया जाएगा। उन्होने युक्रेन के युद्धग्रस्त क्षेत्र की लाइव कवरेज की, इस क्षेत्र में कार्य का इन्होने विशेष प्रशिक्षण लिया है।

ज्योत्स्ना शर्मा प्रदीप (देहरादून)

चलो भरें हम भू के घाव

(जयकरी/चौपाई छन्द)

धरती जीवन का आधार।
धरती पर मानव - परिवार।।
जीव - जंतु की भू ही मात।
धर्म - कर्म कब देखे जात।।

झील, नदी, नग, उपवन, खेत।
हिमनद, मरुथल , सागर,रेत ।।
हिना रंग की मोहक भोर।।
खग का कलरव नदिया शोर।।

करे यहाँ खग हास-विलास ।
अलि, तितली की मधु की प्यास।।
सजा रहे रजनी के केश।।
तारों के दीपित हैं वेश।।

नभ में शशि -रवि के कंदील।
चमकाते धरती का शील।।
युग बदला मन बदले भाव।
मानव के अब बदले चाव।।

हरियाली के मिटे निशान।
वन, नग काटे बने मकान।।
मानव के मन का ये खोट।
मही -हृदय को देता चोट।।

मत भूलो हम भू - संतान।
करो सदा सब माँ का मान।।
हरियाली का कर फैलाव।
चलो भरें हम भू के घाव ।।

इंदिरा दाँगी

कहानीः रेलवे फाटक

बाबूजी कितने सच्चे यक़ीन से कहते थे, "न बेटा, गलत बात! किसी का कर्जा लेके मरेंगे तो अगले जन्म में बैल बनके चुकाना पड़ेगा!" बाबूजी अब दुनिया में भले न हों; लेकिन अपने दिए संस्कारों में शेष हैं। ...संस्कार हैं कि लाख खर्चने पर भी कम नहीं होते!

...संस्कार हैं कि लाख खर्चने पर भी कम नहीं होते! रेलवे क्रॉसिंग का फाटक बंद होते ही, फ़ोरलेन सड़क के दोतरफ़ा, दूर तक वाहनों की भीड़ लग गई।

नंदन ने स्कूटर की चाबी बंद-स्थिति की ओर घुमाई ...पेट्रोल के दाम आसमान छू रहे हैं! चिलकती धूप में दूर तक चौपहियों, दुपहियों के चिड़चिड़ाते-परेशान ड्रायवर हैं। नंदन ने सोचा, आधा मिनिट भर में ये जो अनगिनत गाड़ियाँ इधर-उधर आ रुकी हैं, इनकी क़ीमत करोड़ से तो ऊपर होगी! ...आधा मिनिट भर में करोड़! और उसकी वेतन है आठ हज़ार रुपये महीना। बचत पाँच-सात सौ बमुश्किल! उसका मन हँसता है; ईश्वर तेरी माया, कहीं धूपकहीं छाया!

...और ईश्वर से परम डरने वाले उसके निरीह बाबूजी संस्कारों की पाटी पर जिंदगी का चंदन घिसते-घिसते मर गये। बेमन से ही सही, वो भी घिस ही रहा है अपने आप को उसी पाटी पर! लाख चाहे वो, कभी बन ही नहीं सकता, सोच भी नहीं सकता उन चार सौ बीसियों के बारे में जिनसे रातोंरात ऐसी एसयूवी-एमयूवी-सेडॉन गाड़ियाँ ख़रीदी जा सकें! बाबूजी कितने सच्चे यक़ीन से कहते थे, "न बेटा, गलत बात! किसी का कर्जा लेके मरेंगे तो अगले जन्म में बैल बनके चुकाना पड़ेगा!" बाबूजी अब दुनिया में भले न हों; लेकिन अपने दिए संस्कारों में शेष हैं। ...संस्कार हैं कि लाख खर्चने पर भी कम नहीं होते!

गाड़ियों की चिल्लपों, मौसम की उमस, उड़ती धूल और हर स्कूटर-कार की -और -और आगे, क्रासिंग लाइन के बिल्कुल पास जा पहुँचने की होड़-जल्दबाज़ी को नंदन देख रहा है। मोटरसाइकिल वाले एक परिवार के लोग -युवा दम्पति और उनकी दो नन्ही बेटियाँ -बंद क्रॉसिंगगेट के नीचे से निकलकर पटरियाँ पार कर रहे हैं। उधर, दूर दिशा से रेल अपने आने की विसल 'कूँऊँऊँऊँऊँ, कूँऊँऊँऊँऊँ' की ध्वनि में जैसे किसी हत्यारिन की तरह अंतिम धमकियाँ देती है। दम्पति की पीछे रह गयीं बेटियाँ अपनी नन्ही-लिटपिटाई दौड़ में पटरियाँ पार कर रही हैं। ...हिन्दुस्तान में अधिकांश शिक्षित लोग वास्तव में अर्द्धशिक्षित हैं!

सब-की-सब, वे करोड़ों की गाड़ियाँ क्षणांश में आगे जाने को आतुर हो उठीं। बहुत उतावलेपन में कई बोनट-मडगार्ड अपने अगलों-पिछलों से छुल गये हैं; रेलवे फाटक नहीं खोला गया है।

शायद दूसरी रेल भी पास होगी। वाहन और वाहन वाले अपनी-अपनी जगह कसमसाकर रह गये हैं। अब पहले से कहीं अधिक दुपहिये-साइकिल सवार क्रॉसिंग गेट के नीचे से निकल-निकलकर बंद पटरियाँ पार करने लगे हैं।

लोगों में कुछ क्षणों का भी धैर्य चुक गया है जैसे। नंदन को कोई शायर याद आता है,

इस शहर में हर शख़्स परेशान-सा क्यूँ है?

"होरा ले लोऽ! बूँट ले लोऽ!''

होरहा बेचने वाले ठेले की तरफ़ उसका ध्यान गया। काबुली होरहों के ताजे भुने ढेर से उठती ख़ुशबू यहाँ तक उड़ आई है। 'बच्चों के लिए लेता चलूँ' सोचकर नंदन ने गाड़ियों की भीड़ में से जैसे-तैसे निकालकर स्कूटर सड़क के किनारे ठेले के पास को कर लिया।

"होरहे कैसे दिये?"

"अस्सी रुपये किलो।"

हैसियत-पार की चीज से तुरंत ध्यान हटाया नंदन ने।

"ये बिना भुने?"

"ये साठ के किलो हैं।''

उसने दिल में कहा, "साली, हर चीज़ इतनी मँहगी है इस शहर में!'' और प्रत्यक्ष में ठेले के एक कोने पर रखे बूँटों की ओर इंगित किया,

"और बूँट क्या भाव लगाओगे?"

"पच्चीस रुपये किलो।"

"बीस लगाओ।"

"कितने किलो लेंगे?"

"आधा किलो।"

"ठीक है।"

ठेलेवाला बूँट तोल रहा है। नंदन होरहे का एक दाना उठाकर मुँह में डाल लेता है। हूँऊँऊँ, क्या बढ़िया स्वाद! लगता है, नमक डालकर भूने हैं! काश, ये ही ख़रीद पाता! वो सोच रहा है।

तभी एक बूढ़ी लौहपीटनी वहाँ आ रुकी है। उसके सिर पर लोहे के वज़नदार बर्तनों की टोकरी है जिसे वो हर दिन घंटों उठाये रहने को विवश है -शायद उम्र भर से। उसने होरहों का भाव पूछा है; फिर चुपचाप आगे बढ़ गई है।

...सब स्वाद सबकी पहुँच में होते काश! इधर दूसरी रेल भी गुज़र गई। फ़ाटक खुलने को है। दुपहिये, चौपहिये अपने चुके हुए धैर्य के साथ दौड़ लगा देने को हड़बड़ाये-बेचैन!

ठेलेवाले ने तोलकर बूँट उसे पकड़ा दिये।

"अरे, पन्नी में तो दो!"

"पन्नी नहीं है सा'ब। आजकल बड़ी कड़ाई होने लगी है पन्नी की मोटाई-पतलाईपे; सो हमने रखनी ही छोड़ दी।"

"अब मैं स्कूटर पर रखूँगा कहाँ?" -झुंझलाये नंदन ने अगली ओपन डिग्गी में बूँट जबरन ठूँस दिये हैं जहाँ उसका खाने का ख़ाली डिब्बा, एक सुतली, एक टूटा इंडीकेटर और पानी से अधभरी पाँच सौ एमएल वाली सॉफ़्टड्रिंक मार्का बोतल रखी थी।

कुछ बूँटस्कूटर में पैर रखने वाली ख़ाली जगह के बीच आ गिरे। अब एहतियात से स्कूटर चलाकर ले जाना पड़ेगा; रफ़्तार से कहीं राह में न गिर जायें!

स्कूटर पर खड़े-खड़े इधर नंदन ने पैंट की पिछली जेब में पर्स निकालने के लिए हाथ डाला। उधर रेलवे फ़ाटक खुल गया है और भीड़मभीड़ मचाते दुपहिये-चौपहिये दौड़ने को तैयार हो रहे हैं ...यहाँ जीवन एक अनंत दौड़ है जैसे! क्या वाकई अनंत? नंदन की जेब से पर्स नदारत है। ...इस जेब ...उस जेब -कहीं भी नहीं!

ओह! घर पर ही भूल आया आज! और दिन भर कार्यालय में उसे ये बात पता भी नहीं चली ?...शहर की रफ़्तार सबसे पहले दिमाग़ को बदहवास करती है!

चेहरे पर सच्चे अफ़सोस के साथ, नंदन ने सब बूँट समेटकर ठेलेवाले की ओर बढ़ाये,

"सॉरी यार, मैं पर्स घर पर ही भूल आया!''

"पर्स भूल आये ?...''

"लो वापिस ले लो अपने बूँट।''

पर नंदन के आगे बढ़े हाथ से अब तक ठेलेवाले ने बूँट वापिस नहीं लिए थे।

"...तो कोई बात नहीं! उधार ले जाइये। आपने जरूर अपने बच्चों के लिए लिये हैं!''

...आम आदमी की तजुर्बेकार नज़र!

"पर मैं तुम्हारे पैसे चुकाऊँगा कैसे? कल तुम यहीं मिलोगे ?''

-नंदन ने बूँट वापिस स्कूटर की ओपन डिग्गी में समेट लिये।

"अगर मिल गया तो दे देना।'' मस्त कलंदर वाली आवाज़ में ठेलेवाले ने कहा।

अब, दरअसल पहली बार, नंदन ने ठेले की बिकाऊ चीज़ों से नज़र ऊपर उठाते हुए ठेलेवाले के चेहरे को देखा। ...इतना संतोष कैसे ?

पीछे से बहुत हार्न बजने लगे। हड़बड़ी में नंदन ने स्कूटर को रफ़्तार दे दी; ठेलेवाले को धन्यवाद कह पाने का भी समय न मिल सका।

dangiindira4@gmail.com

समीक्षा: टिकाऊ चमचों की वापसी वैचारिक व्यंग्य संग्रह है

विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल

किताब की शुरुवात लेखक के मन में उद्भूत विचारों से होती है. लेखक लिखता है . कम्पोजर कम्पोज कारता है. अक्षर शब्द और शब्द वाक्य बन जाते हैं, भाव मुखर हो उठते हैं. प्रकाशक छापता है. समारोह पूर्वक किताबों के विमोचन होते हैं. समीक्षक चर्चा करते हैं. किताब विक्रेता से होते हुये पाठक तक पहुंचती है. पाठक जब पुस्तक पढ़कर लेखक की वैचारिक यात्रा में बराबरी से भागीदारी करता है, तब किंचित यह यात्रा गंतव्य तक पहुंचती लगती है.

रचना के दीर्घगामी प्रभाव पड़ते हैं. लेखक सम्मानित होते हैं, पाठक रचनाकार के प्रशंसक, या आलोचक बन जाते हैं. अर्थात किताब की यात्रा सतत है, लम्बी होती है. अशोक व्यास व्यंग्य के मंजे हुये प्रस्तोता हैं. टिकाऊ चमचों की वापसी उनकी दूसरी किताब है. सुस्थापित लोकप्रिय, भावना प्रकाशन से यह कृति अच्छे गेटअप में प्रकाशित है.

सूर्यबाला जी ने प्रारंभिक पन्नो में अपनी भूमिका में पाया है कि लेखक अपने व्यंग्य कर्म में कहिं भी असावधान नहीं है. लालित्य ललित ने संग्रह के व्यंग्य पढ़कर आशा व्यक्त की है कि अपने आगामी संग्रहों में लेखक की चिंताये और व्यापक व अंतर्राष्ट्रीय हों. इस संग्रह में बत्तीस व्यंग्य हैं. पाठको के लिये विषयों पर सरसरी नजर डालना जरूरी है. अंग्रेजी घर पर है ?, अजब गजब मध्य प्रदेश , अध्यक्ष जी नहीं रहे. अध्यक्ष जी अमर रहें, आइए सरकार, जाइए, आभासी दुनिया का वास्तविक बन्दा, कलयुग नाम अधारा आपका आधार कार्ड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भारतीय तरीका, कोरोना कल्चर का प्रभाव, कोरोना की कृपा, गोद ग्रहण समारोह, जा आ आ जा आ आ दू !

जा आ आ दू , टिकाऊ चमचों की वापसी, ताली बजाओ ताल मिलाओ, दामाद बनाम फूफाजी, बुरा नहीं मानेंगे... चुनाव है, भारत निर्माण यात्रा, मध्यक्षता करा लो... मध्यक्षता, रंगबाज राजनीति, लिव आउट अर्थात छोड़ छुट्टा, विश्व युद्ध की संभावना से अभिभूत , सड़क बनाएँ, गड्ढे खोदें सतर्क मध्यमार्गी , सत्तर प्लस का युवा गणतन्त्र, साहित्यमति का बाहुबली साहित्यकार, सेवा के लिए प्रवेश, ज्ञान के लिए प्रस्थान, सोशल मीडिया के ट्रैफिक सिग्नल, हलवा वाला बजट , हाँ. मैं हूँ सुरक्षित !

होली के रंग बापू के संग, ईश्वर के यहाँ जल वितरण समस्या, जैसे दूरदर्शन के दिन फिरे और पोस्ट वाला ऑफिस डाकघर शीर्षकों से हजार, पंद्रह सौ शब्दों में अपनी बात कहते व्यंग्य लेखों को इस पुस्तक का कलेवर बनाया गया है. टाइटिल लेख टिकाऊ चमचों की वापसी से यह अंश उधृत करता हूं, जिससे आपको रचनाकार की शैली का किंचित आभास हो सके. प्लास्टिक के चमचों की जगह फिर धातुओ के चम्मचों का इस्तेमाल पसंद किया जा रहा है, यूज एण्ड थ्रो के जमाने में स्थायी और टिकाउ चमचों की वापसी स्वागत योग्य है . वह चमचा ही क्या जो मंह लगाने के बादस फेंक दिया जाये ... जैसे स्टील के चमचों के दिन फिरे ऐसे सबकें फिरें ... . अशोक व्यास अपने इर्द गिर्द से विषय उठाकर सहज सरल भाषा में व्यंग्य के संपुट के संग थोड़ा गुदगुदाते हुये कटाक्ष करते दिखते हैं .

परसाई जी ने लिखा था बलात्कार कई रूपों में होता है . बाद में हत्या कर दी जाती है . बलात्कार उसे मानते हैं जिसकी रिपोर्ट थाने में होती है. पर ऐसे बलात्कार असंख्य होते हैं जिनमें न छुरा दिखाया जाता है न गला घोंटा जाता है , न पोलिस में रपट होती है।

अशोक जी ने हम सबके रोजमर्रा जीवन में हमारे साथ होते विसंगतियों के ऐसे ही बलात्कारों को उजागर किया है, जिनमें हम विवश यातना झेलकर बिना कहीं रिपोर्ट किये गूंगे बने रहते हैं . उनकी इस बहुविषयक रिपोर्टो पर क्या कार्यवाही होगी ? कार्यवाही कौन करेगा ? सड़क पर लड़की की हत्या होती देखने वाला गूंगा समाज ? व्हाटस अप पर क्रांति फारवर्ड करने वाले हम आप ? या प्यार को कट पीसेज में फ्रिज में रखकर प्रेशर कुकर में प्रेमिका को उबालकर डिस्पोज आफ करने वाले तथाकथित प्रेमी ?

हवा के झोंके में कांक्रीट के पुल उड़ा देने वाले भ्रष्टाचारी अथवा सत्ता के लिये विदेशों में देश के विरुद्ध षडयंत्र की बोली बोलने वाले राजनेता ? इन सब के विरुद्ध हर व्यंग्यकार अपने तरीके से, अपनी शैली में लेखकीय संघर्ष कर रहा है . अशोक व्यास की यह कृति भी उसी अनथक यात्रा का हिस्सा है . पठनीय और विचारणीय है .

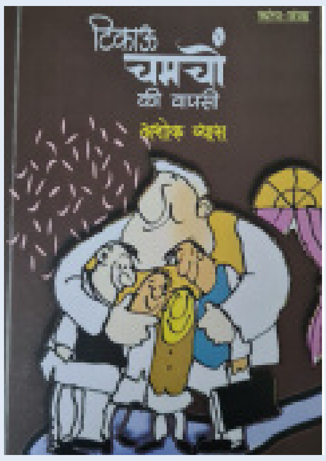

पुस्तक चर्चा

टिकाऊ चमचों की वापसी
अशोक व्यास
भावना प्रकाशन, दिल्ली
संस्करण २०२१
अजिल्द , पृष्ठ १२८, मूल्य १९९ रु
चर्चा... विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल

मैं कह सकता हूं कि टिकाऊ चमचों की वापसी वैचारिक व्यंग्य संग्रह है. अशोक व्यास संवेदना से भरे, व्यंग्यकार हैं . संग्रह खरीद कर पढ़यि आपको आपके आस पास घटित, शब्द चित्रों के माध्यम से पुनः देखने मिलेगा . हिन्दी व्यंग्य को अशोक व्यास से उम्मीदें हैं जो उनकी आगामी किताबों की राह देख रहा है.

एक लम्बी उड़ान सफलता की ओर

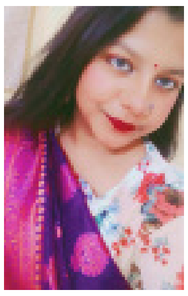

ये है जानभी चौधुरी, जो की ओड़िशा की रहने वाली है। ये एक ग्रेजुएट शिक्षक है। इन्हे संगीत गाना, पेन स्केच करना, प्रकृति फोटोग्राफी करना, सबकी मदत करना, नया कुछ सिखना और नृत्य करना बेहत पसंद है। पहले से इनको लिखना इतना पसंद नहीं था, मगर इनके जीबन में कुछ ऐसा हुआ की, वह डिप्रेशन से गुजरने लगी थी, उनकी मानसिक स्थिति का असर उनके पढ़ाई और तबीयत पर होने लगा, उनकी दशा बहुत बुरी हो गयी थी मगर तभी से उन्होंने लिखना शुरू किया, अपने अंदर के जज़्बातों को कागज़ में ज़ाहिर करना शुरू किया।

अपने हाल को शब्दों में पिरोना शुरू किया। मगर वह कभी हार नहीं मानी और डटकर अपने परिस्थिति का सामना किया और तब इनके माता -पिता ने ही इनका खोया हुआ आत्मबिस्वास बढ़ाया।

वह कहती है, सब हमे समझाने लगे मगर असर तब हुआ जब हम खुदके साथी बने, खुदसे प्यार करना सीखा और अँधेरे में गिरते - संभलते उसने अकेले रोशनी में चलना सिख ही लिया। और आज उन्हे लिखते -लिखते 3-4 साल हो गए हैं।

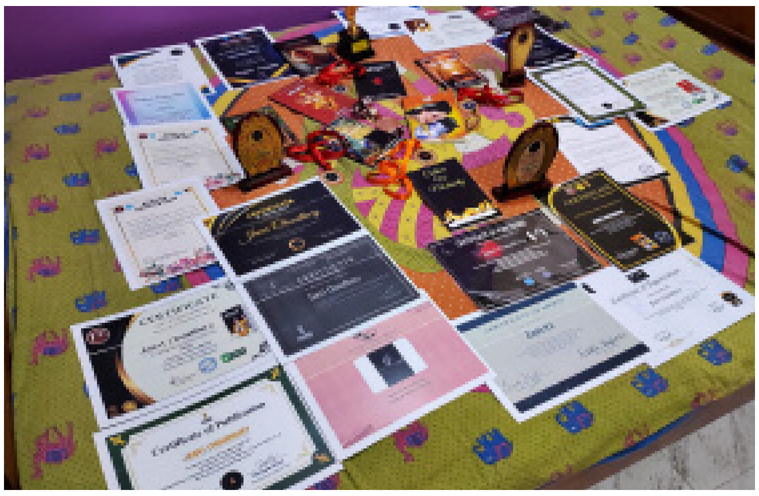

वह बिश्वास करती है, जो पहले लिखना पसंद नहीं करती थी आज उसी लेखन से उसके जीवन को एक नयी दिशा दे दी है और ऐसी कोई जगह नहीं है की, जहाँ उनका लिखन न हो, उन्हे कविता, गद्य, शायरी, मोटिवेशनल स्टोरी और अनुच्छेद लिखना बहुत पसंद करती हैं।

स्टोरी मिरर पर भी उनका लिखन है और वह पॉडकास्ट भी करती है। आज न जाने कितने भटके लोगों को वह रास्ता दिखा चुकी हैं। उनका लक्ष्य है की वह सबकी मदत करें, जिस अवस्था से वह गुज़र चुकी है, उससे कोई और न गुज़रे

।वह समाज के लिए आज के युवा के लिए अपने लिखन के माध्यम से मदत करना चाहती है। उनका इंस्टाग्राम पेज है, जहाँ वह 2000+ से ज़्यादा लोगों से जुडी हुई है, अपने लिखन और वॉइस ओवर रील्स के माध्यम से। उनका लक्ष्य है, की वह कभी करोड़ों लोगों की आवाज़ बने, एक मोटिवेशनल स्पीकर बने और लोगों को प्रेरित करें। ये बहुत संकलन में काम कर चुकी है अभी भी कर रही है , बहुत संकलन में ये खुद संकलक भी रह चुकी हैं। इनकी अपनी संकलन है, कलयुग- काल का युग , दिल की बातें (Sarvad Publication), हाल -ए -ज़िंदगी - The Untamned (Brown Page Publication), Culture Vs Modernity (Ek Shayar Ki Baate Publication), 90's Memories-The Nostalgia Alert (Uniq Publication) और हाली में लांच हुआ है, माँ -एक सच्ची कहानी, एक संघर्ष की निशानी (JEC Publication) और बहुत से समाचार पत्र में भी प्रकाशित हुई है। जैसे की, संस्कार समाचार, The Gram Today समाचार, Redhanded समाचार, हम हिंदूस्तानी USA (एक साप्ताहिक हिंदी बिदेशी समाचार पत्र), Coalfield Mirror समाचार, युग जागरण समाचार, दैनिक रोशनी समाचार, रुहेला टाइगर्स टाइम्स समाचार, दैनिक साहित्य समाचार, इंदौर समाचार, भारत टाइम्स समाचार, झंझट टाइम्स और राजगीर फ्रंटलाइन समाचार पत्र।इन्हे बहुत पदक, सम्मान पत्र और ट्रॉफी से सम्मानित किया गया है।

विश्वाकाश ग्रंथ रचनाकार के द्वारा सम्मानित पत्र प्राप्ति हुई है इन्हे। विश्वाकाश के चमकते सूर्य 2023 में मिला है इन्हे सम्मान पत्र।

इनकी पुस्तके Amazon, Flipkart पर है और Play Book Store पर भी है। और ये सफलता का श्रेय अपने ईश्वर, अपने पिता -माता और अपने करीबी लोगों को देती है।और बिश्वास करती है की अगर आत्मबिस्वास हो तो इंसान अपनी परिस्थिति का सामना कर, अपनी किस्मत खुद बदल सकता है।

संध्या चतुर्वेदी, मथुरा, उप्र

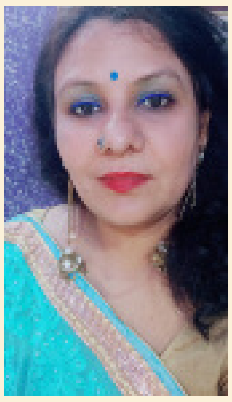

कैसी यह मुहब्बत

कैसी यह मुहब्बत है दोस्तो
कट रही रोज टुकडों में दोस्तों

जब प्यार था तब घर वार छोड़ दिया
आज उस ने ही यार प्यार छोड़ दिया

दिल से उतार फैंक दो उसे तुम
जिसने तुझे दिल से निकाल दिया

सौ टुकड़ो में कटने से अच्छा है
कि अकेले जिंदा रह लेना दोस्तों

जिंदगी जीने की सौ वजह ढूंढ लेना दोस्तों
तुम्हारे साथ जो हो रहा उस से उबर कर

दूसरों के लिए थोड़ा जी लेना दोस्तों
गम न करना मुहब्बत गंवाने का जरा भी

मिलती नहीं यह जिंदगी दुबारा तो
कुछ अपनी फिक्र कर लेना दोस्तों।।

ममता सिंह राठौर कानपुर

कदम भी अपना सफर

मोहब्बत लिखा तो पूछा यह क्या लिखा
नफरतों में यही सवाल किसके लिए लिखा।।

अरे बाबा लिखने दीजिए ख़ुद से जीने दीजिए
मन के विस्तृत आंगन में आने _ जाने दीजिए।।

अनुभवों के रंग से जिंदगी रगने दीजिए
अरे बाबा जिंदगी के स्वाद को चखने दीजिए।।

हदों के पार का ख़ामोश देखिए
मोल _तोल के बीच का झोल देखिए।।

अरे देखिए तो सही
जिंदगी का कड़वा कठोर देखिए
कदम भी अपना सफर भी अपना चलते चलिए।।

कही _सुनी कुछ _तुड़ी मुड़ी
मीठी खट्टी मिली जुली
यह जिंदगी किसकी खातिर,
मन के माफिक कौन है साथी।।

BNM Fantasy

शुरू हुई आयरा-नुपुर की वेडिंग फेस्टिविटी

आमिर खान की बेटी आयरा खान इन दिनों फैमिली और फ्रेंड्स के साथ उदयपुर के ताज लेक पैलेस में हैं। यहां 6 से 10 जनवरी तक उनकी डेस्टिनेशन वेडिंग चल रही है। रविवार को आमिर खान, उनकी सेकेंड एक्स वाइफ किरण राव और आयरा की कजिन जायन मैरी ने उदयपुर के लोकल कलाकारों के साथ डांस किया। इसी के साथ आयरा की वेडिंग फेस्टिविटीज की शुरुआत भी हो चुकी है।दूसरी तरफ खुद आयरा भी उदयपुर से अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर स्टोरीज शेयर कर रही हैं। उन्होंने शादी के एक फैंसी कार्ड का एक वीडियो शेयर किया है, जिससे वेडिंग फंक्शन से जुड़ी डिटेल्स सामने आई हैं।

ए

'एनिमल' सक्सेस पार्टी: रश्मिका से गले मिलते नजर आए रणबीर

शनिवार की रात 'एनिमल' फिल्म की सक्सेस पार्टी रखी गई। ये पार्टी मुंबई में जुहू के जेडब्ल्यू मैरियट होटल में हुई। ये मुंबई का पॉपुलर 5 स्टार होटल है, जहां अक्सर फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े इवेंट्स और पार्टीज होती रहती हैं। इस पार्टी में काफी बी-टाउन सेलेब्स को स्पॉट किया गया। पार्टी में रणबीर कपूर को वाइफ आलिया, मां नीतू कपूर और ससुर महेश भट्ट के साथ देखा गया। रणबीर और आलिया ने भी साथ में पोज दिया। 'एनिमल' की भाभी 1 और भाभी 2 यानी कि रश्मिका मंदाना और तृप्ति डिमरी को भी स्पॉट किया गया। बॉबी देओल व्हाइट एंड ब्लैक आउटफिट में नजर आए। उन्होंने पैपराजी को अबरार का सिग्नेचर पोज भी दिया। इनके अलावा 'एनिमल' की टीम नजर आई। कपल रितेश और जेनेलिया भी साथ आए। रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी ग्लैमरस लुक में आईं। सुनील शेट्टी, मानुषी छिल्लर, तमन्ना भाटिया भी नजर आए। विवेक ओबेरॉय पिता सुरेश ओबेरॉय के साथ पार्टी में दिखे।1 दिसंबर को रिलीज हुई फिल्म 'एनिमल' ने ताबड़तोड़ कमाई की। दुनियाभर में इस फिल्म ने 800 करोड़ रुपए के ऊपर का कलेक्शन कर लिया है। 'एनिमल' को ऑडियंस का भी खूब प्यार मिला। वहीं इस फिल्म से बॉबी देओल, तृप्ति डिमरी की पॉपुलैरिटी भी काफी बढ़ गई। संदीप रेड्डी वांगा के डायरेक्शन में बनी ये फिल्म रणबीर कपूर के करियर की अब तक कि सबसे सफल फिल्म साबित हुई है।

अर्चना गौतम ने खरीदा करोड़ों का घर

अचीवमेंट से दिया करारा जवाब

स्टार टॉक्स' में आपका स्वागत है। आज हम आपसे मिलवाएंगे उस पर्सनालिटी से जिन्होंने पिछले 7 सालों में मुंबई में 8 घर बदले। दरअसल, हर 11 महीने में उन्हें अपना किराए का घर बदलना पड़ता था। लेकिन, अब उन्हें इस मुसीबत से राहत मिल गई है। हम बात कर रहे हैं एक्ट्रेस-पॉलिटीशियन अर्चना गौतम की, जिन्होंने हाल ही में सपनों की नगरी, मुंबई में अपना खुद का आशियाना खरीदा है। वैसे, इस आशियाना की कीमत लाखों में नहीं बल्कि करोड़ों में है। अर्चना की मानें तो कई सालों पहले, बॉलीवुड के एक वेटरन एक्टर-विलेन ने उनकी अपनी बेटी के जूतों से तुलना की थी। अर्चना दुआ कर रही थीं कि उनकी अचीवमेंट देखने के लिए वह अभिनेता जिंदा रहे। उन्हें खुशी है कि उन्होंने जैसा चाहा वैसा हुआ। बता दें, अर्चना ने मुंबई के पॉश इलाके, अंधेरी वेस्ट में 2BHK लिया है। वे अपनी खानदान की पहली सदस्य हैं जिसके घर के बाहर 'गौतम' का नेमप्लेट लगेगा। दरअसल, अर्चना के पिता की एक छोटी सी जमीन थी जिसे उनके ही परिवार वालों ने हड़प लिया। वे अपने बच्चे और बीवी की खातिर, उन घरवालों से लड़े नहीं। इस घटना के बाद, वे कभी अपना घर नहीं बना पाए।अब अर्चना ने घर तो खरीद लिया लेकिन इस सपने को अंजाम तक पहुंचाना आसान नहीं था। सपनों के बीच आ गया उनका पॉलिटिकल कनेक्शन। अकाउंट में थोड़ी बहुत सेविंग्स थी जिसके भरोसे करोड़ों का घर खरीदने निकल तो पड़ीं, लेकिन कोई उन्हें लोन देने को तैयार नहीं था। हाल ही में अर्चना ने दैनिक भास्कर को अपने इस नए घर का टूर करवाया जिसके फर्नीचर का काम अभी शुरू होना बाकी है। वे जल्द ही अपने नए घर का इंटीरियर शुरू करने वाली हैं और इस साल के अप्रैल महीने तक वे वहां अपने पेरेंट्स के साथ शिफ्ट हो जाएंगी। अर्चना अपनी इस अचीवमेंट से बहुत खुश हैं। इंटरव्यू के दौरान, उन्होंने बताया कि वे अपने नए घर के इंटीरियर पर पूरी तरह से फोकस करना चाहती हैं और यही वजह है कि वे ज्यादा काम नहीं ले रही। हालांकि, इस घर में अपनी सेविंग्स लगा दी, यहां तक की अपनी मां के गहने तक गिरवी रख दिए।